Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor: 4.081
Volume-12, Issue-3, December-2018 www.researchguru.net

केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

डॉ ज्योति गुप्ता
व्याख्याता सेंट विल्फ्रेडस टीर्चस ट्रेनिंग कालेज मानसरोवर जयपुर राजस्थान 302020

सारांश यह अध्ययन केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि की खोज करती है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु जयपुर के तीन तथा 12 राजकीय विद्यालयों का चयन यादृच्छिक रूप से लाटरी विधि द्वारा तथा 600 विद्यार्थियों को न्यादर्ष चयन की यादृच्छिक गुच्छ विधि द्वारा किया गया है। संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए मिश्रा(2007), द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का उपयोग किया गया है। संकलित प्रदत्तों के साँख्यिकीय विष्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एंव टी–परीक्षण का उपयोग किया गया है। 'षोध में पाया गया कि केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

Key words: संवेगात्मक बुद्धि, केन्द्रीय विद्यालय, राजकीय विद्यालय

समप्रत्यात्मक पृष्ठभूमि :

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली वह प्रक्रिया है जो बालक के सर्वागीण विकास में सहायक होती है। मानव जीवन में षिक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में यह अत्यन्त आवश्यक है कि संज्ञानात्मक एवं गत्यात्मक परिक्षेत्रों के साथ–साथ भावात्मक परिक्षेत्र विकसित करने की प्रक्रिया पर ध्यान दिया जाये। भावात्मक परिक्षेत्र के अन्तर्गत भावनाओं को समझना, व्यक्ति के संवेगों को समझना, उन्हें मूल्य प्रदान करना, संवेगों के औचित्य एवं अनौचित्य की समझ विकसित करना एवं तद्नुरूप निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करना है। षिक्षा के उद्देष्यों के विभिन्न परिक्षेत्रों पर दृष्टि डालें तो ब्लूम के अनुसार षिक्षा संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं गत्यात्मक उद्देष्यों की पूर्ति करती है। वर्तमान षिक्षा व्यवस्था में संज्ञानात्मक एवं गत्यात्मक परिक्षेत्रों के उद्देश्यों की सम्प्राप्ति पर सर्वाधिक बल है। इस कारण एक परिक्षेत्र जिसका संबंध भावना, संवेगों पर नियंत्रण, मूल्यों की स्थापना, निर्णयात्मक शक्ति आदि से संबंधित है, द्वितीयक बनता प्रतीत हो रहा है। परिणामतः उसमें मानवोचित गुणों तथा सामाजिक मूल्य, संवाद की क्षमता, संवेदना, संवेगों पर नियंत्रण, सहिष्णुता, परहित, शान्तिप्रियता, संतोष आदि को विकसित होना कठिन कार्य सिद्ध हो रहा है। इसका प्रभाव शैक्षिक संस्थाओं, सामाजिक संबंधों एवं व्यक्ति के स्वयं के जीवन पर नकारात्मक ढंग से पड़ रहा है।

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में यह अत्यन्त आवश्यक है कि संज्ञानात्मक एवं गत्यात्मक परिक्षेत्रों के साथ–साथ भावात्मक परिक्षेत्र को भी महत्व दिया जाये और इसे भी विकसित करने की प्रक्रिया की गति बढ़ाने हेतु प्रयत्न किये जाये। भावात्मक परिक्षेत्र के अन्तर्गत भावनाओं को समझना, व्यक्ति के संवेगों को समझना, उन्हें मूल्य प्रदान करना, संवेगों के औचित्य एवं औचित्यहीनता की समझ विकसित करना एवं तदनुरूप निर्णय लेना आता है।

संवेगात्मक बुद्धि को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु संवेगों का उपयोग करने वाली संज्ञानात्मक योग्यताओं का समूह माना जाता है। स्वयं एवं दूसरों के अन्दर स्थित संवेगों को पहचानने समझने एवं उनका प्रबन्धन करने की योग्यता को सांवेगिक बुद्धि कहते है। इस प्रत्यय का उद्भव **वायने पायने** द्वारा हुआ है। इसे लोकप्रिय बनाने का श्रेय गोलमेन को जाता है। संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विषेष की उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उसकी ऐसी उचित अनुभूति एवं अभिव्यक्ति करने–कराने में इस प्रकार मदद करे, कि वह ऐसी वांछित व्यवहार अनुक्रियायें कर सके जिनसे उसे दूसरों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपना समुचित हित करने हेतु अधिक से अधिक अच्छे अवसर प्राप्त हो सकें। प्रत्येक बालक एक निष्चित और विषिष्ट सांवेगिक संवेदनषीलता, सांवेगिक स्मृति, सांवेगिक प्रक्रिया और सांवेगिक सीखने की शक्ति के साथ जन्म लेता है। ये चार जन्म–जात तत्व संवेगात्मक बुद्धि के केन्द्रीय भाग का गठन करते हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किषोरावस्था के प्रारिम्भक काल में होते है। वे संवेगात्मक रूप से चंचल और अस्थिर

होते है। संवेगात्मक बुद्धि यह निर्णय लेने में सहायक है कि बालक किस स्तर तक सफल हो सकता है तथा सामाजिक व्यवहार व शैक्षणिक उपलब्धि कैसे प्रभावित होती है।

बुद्धिलब्धि ही किसी कार्य में सफलता का अब एक मात्र आधार नहीं है बल्कि यह मात्र बीस प्रतिषत सफलता का ही आधार है। अस्सी प्रतिषत सफलता भावात्मक व सामाजिक बुद्धि तथा भाग्य आदि पर निर्भर करती है। संवेगात्मक बुद्धि असंज्ञानात्मक क्षमताओं कौषलों और उपलब्धियों का ऐसा समूह है जो किसी व्यक्ति की सफलता की क्षमता को प्रभावित करता है, ताकि वह अपने वातावरण की मांग और दबाव के साथ अनुकूलन कर सके। **दरशना (2007)** ने उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि तथा निष्चित उपलब्धि को बढ़ाने वाले चर के अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक आर्थिक स्थिति में अत्यधिक सम्बन्ध होता हैं। **सिंह (2006)** ने भावात्मक बुद्धि के संबंध में परीक्षा तनाव का अध्ययन कर पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्रों पर परीक्षा तनाव का प्रभाव नहीं पड़ता है।

अन्नाकोडाई (2013) ने कोयम्बटूर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी अध्ययन कर पाया कि स्वस्थ संवेगात्मक बुद्धि द्वारा विद्यार्थी नई परिस्थितियों का सामना सफलतापूर्वक कर सकता है। संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों की सफलता के लिये आवष्यक कारक है तथा यह परिवार में संतुलन बनाने में भी मद्द करती है। **टेलर (2001)** ने उच्च संवेगात्मक बुद्धि एवं प्रभावशीलता सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि लोगों के कौशलों पर भी प्रभाव डालती है तथा कार्य क्षेत्र में मूल्यवान सफलता और परिवार कार्यो के मध्य संतुलन बनाये रखने में सहायक दिखाई देती है यह भी देखा गया है कि छात्र एंव छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर होता है। **रानी (2017)** ने इमोशनल इन्टेलीजेन्स एमंग सीनियर सेकण्डरी स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेषन टू देयर जेण्डर, टाइप ऑफ स्कूल एण्ड एकडमिक एचीवमेंट के अध्ययन में पाया कि सीनियर सेकण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, लिंग और विविध प्रकार के विद्यालयों के संर्दभ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। **कुमारी, चामुण्डेश्वरी (2015),** ने विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, विद्यालयी वातावरण और अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन किया। परिणाम स्वरूप पाया कि माध्यमिक स्तरीय विद्यालय व सेन्ट्रल बोर्ड के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के अनुकूलता में विद्यालयी वातावरण और अकादमिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है। **नारा (2014)** ने हरियाणा के सेकण्ड़री स्कूल के विद्यार्थियों का लिंग के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर होता है। **बानो, मकबूल एवं भट्ट (2013)** ने श्रीनगर के किशोर लड़के और लड़कियों की संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि किशोर लड़के, किशोर लड़कियों से ज्यादा संवेगात्मक बुद्धि रखते है।

एम. ट्रीनिडैड सैनचेज–नुजेन, पैबेलो फरनानडेज–बोरोकाल एवं अन्य (2008) ने पाया कि लिंग के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर बच्चों के बाल्यावस्था से सिखाने के ढंग के कारण हो सकता है। **जरशील्ड** ने लिखा है ''परिवार के बाद विद्यालय, उन भावनाओं पर आधार भूत प्रभाव डालता है जिसका निर्माण वह अपने और दूसरों के प्रति करता है।'' विभिन्न प्रकार के स्कूलों में विभिन्न प्रकार का वातावरण होता है।

केन्द्रीय विद्यालय केन्द्र सरकार के मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा संचालित विद्यालय जो सी.बी.एस.ई. से मान्यता प्राप्त है। सभी केन्द्रीय विद्यालयों में एक समान पुस्तकें व द्वि–भाषा माध्यम से षिक्षा प्रदान की जाती है। सभी केन्द्रीय विद्यालयों में सह–षिक्षा प्रणाली अपनाई जाती है। षिक्षा की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए अध्यापक–षिष्य अनुपात का भी ध्यान रखा जाता है।

केन्द्रीय विद्यालयों में मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की पर्याप्त रुप में उपलब्धता सुनिष्चत होने के कारण तदनुरुप वहाँ का षैक्षिक वातावरण अन्य प्रकार के विद्यालयों की तुलना में बेहतर समझा जाता है।

राजकीय विद्यालय राज्य सरकार द्वारा पूर्णतः अनुदानित एवं नियन्त्रित विद्यालय है। जिसका संचालन राज्य षिक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाता है। इसमें विद्यार्थियों को निःषुल्क तथा न्यूनतम शुल्क दर पर षिक्षा प्रदान की जाती है। जिनमें प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों को षिक्षा दी जाती है। शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से जानना चाहा हैं कि क्या विद्यालयी भिन्नता का प्रभाव विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पड़ता है? उक्त प्रश्न के हल के लिए ही शोधकर्त्री ने केंन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि नामक विषय को अध्ययन का केन्द्र बनाया है।

समस्या कथन : प्रस्तुत षोध की समस्या को शोधकर्त्री ने निम्नलिखित रुप में रखा है–

केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्यः प्रस्तुत शोध के लिए शोधकर्त्री ने अग्रांकित उद्देष्य का निर्धारण किया है–

मुख्य उद्देश्यः केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

सहायक उद्देश्य : केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्वयं के संवेग की अभिव्यक्ति, दूसरों के संवेगों को समझने, स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण एवं दूसरों के संवेगों के प्रबंध की योग्यता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनायें: प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न घोषणात्मक परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य परिकल्पना : केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है।

सहायक परिकल्पना : केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति, दूसरों के संवेगों को समझने, स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण एवं दूसरों के संवेगों के प्रबंध की योग्यताओं में सार्थक अन्तर है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति सर्वेक्षणात्मक होने के कारण शोध को पूर्ण करने हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या : प्रस्तुत शोध जयपुर शहर के केन्द्रीय एवं राजकीय विद्यालयों की कक्षा नौ में अध्ययनरत् समस्त विद्यार्थी शोध अध्ययन की जनसंख्या है।

न्यादर्शन एवं न्यादर्श :शोधकर्त्री ने अध्ययन हेतु जयपुर के छः केन्द्रीय विद्यालयों में से तीन तथा जयपुर के 128 राजकीय विद्यालयों में से 12 माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक रूप से लाटरी विधि द्वारा किया गया है। इस शोध अध्ययन में केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालयों के कुल 100 विद्यार्थियों तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालयों **के 500** विद्यार्थियों का चयन, न्यादर्ष चयन की **यादृच्छिक गुच्छ विधि** द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण : प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री ने संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए **मिश्रा(2007),** द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का उपयोग किया गया है।

सांख्यकीय प्रविधियाँ : प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा संकलित प्रदत्तों के साँख्यिकीय विष्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एंव टी–परीक्षण का उपयोग किया गया है।

आँकड़ों का, विष्लेषण एंव व्याख्या :

मुख्य शोध परिकल्पना : 'केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है', के परीक्षण हेतु शोधकर्त्री द्वारा 'केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है', रूपी षून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है–

तालिका संख्या – 01

केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों **की संवेगात्मक बुद्धि**

क्रम संख्या	विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान
1.	केन्द्रीय	100	97.60	22.25	2.22	1.19
2.	राजकीय	500	95.42	15.21	0.95	

स्वतंत्रता के अंश 98 एवं विश्वास के स्तर 0.05 पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98

तालिका संख्या 01 के अवलोकन से स्पष्ट है कि केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान का मान क्रमशः 97.60 एवं 95.42 है, मानक विचलन का मान 22.25 एवं 15.21 है जिनकी मानक त्रुटि का मान 2.22 एवं 0.95 है। टी का अवकलित मान 1.19 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 विष्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवष्यक तालिका मान से कम हैं। इसलिए षोध परिकल्पना 'केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है', को अस्वीकार किया जाता है तथा षून्य परिकल्पना 'केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है' को स्वीकार किया जाता है।

परिणामतः सामान्यीकरण स्थापित होता है कि केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री ने संवेगात्मक बुद्धि (स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति की योग्यता, दूसरों के संवेगों को समझने की योग्यता, स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण की योग्यता एवं दूसरों के संवेगों के प्रबन्ध की योग्यता) के आयामवार अध्ययन करने के उद्देश्य से सहायक परिकल्पना का निर्माण कर परीक्षण किया।

सहायक परिकल्पना ' केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति की योग्यता, दूसरों के संवेगों को समझने की योग्यता, स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण की योग्यता, दूसरों के संवेगों के प्रबन्ध की योग्यता में सार्थक अन्तर है', के परीक्षण हेतु शोधकर्त्री द्वारा 'केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति की योग्यता, दूसरों के संवेगो को समझने की योग्यता, स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण की योग्यता, दूसरों के संवेगों के प्रबन्ध की योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है', रूपी षून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

तालिका संख्या –2

केन्द्रीय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि

क्रम संख्या	संवेगात्मक बुद्धि के आयाम	विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान
1.	स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति की योग्यता	केन्द्रीय	100	23.58	5.20	0.52	**2.01**
		राजकीय	500	24.78	5.51	0.25	
2.	दूसरों के संवेगों को समझने की योग्यता	केन्द्रीय	100	15.25	5.64	0.56	0.76
		राजकीय	500	14.79	5.44	0.24	
3.	स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण की योग्यता	केन्द्रीय	100	46.19	13.36	1.34	1.80
		राजकीय	500	43.72	12.32	0.55	
4.	दूसरों के संवेगों के प्रबन्ध की योग्यता	केन्द्रीय	100	12.58	3.90	0.39	1.03
		राजकीय	500	12.13	4.01	0.18	

स्वतंत्रता के अंश 98 एवं विश्वास के स्तर 0.05 पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98

तालिका संख्या 02 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति की योग्यता के टी–परीक्षण का अवकलित मान 2.01 प्राप्त हुये जो कि 0.05 विष्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवष्यक तालिका के मान से ज्यादा है। इसलिये'षोध परिकल्पना केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति की योग्यता में सार्थक अन्तर है', को स्वीकार किया जाता है तथा षून्य परिकल्पना ' की स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति की योग्यता के सार्थक अन्तर नहीं है', को अस्वीकार किया जाता है

तालिका संख्या 02 के अवलोकन से यह भी ज्ञात होता है कि केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की दूसरों के संवेगों को समझने की योग्यता, स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण की योग्यता एवं दूसरों के संवेगों के प्रबन्ध की योग्यता के टी–परीक्षण का अवकलित मान 0.76, 1.80, 1.03 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 विष्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवष्यक तालिका के मान से कम है इसलिये षोध परिकल्पना 'केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की दूसरों के संवेगों को समझने की योग्यता,में सार्थक अन्तर होता है', को अस्वीकार किया जाता है', तथा षून्य परिकल्पना ' केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की दूसरों के संवेगो को समझने की योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है', को स्वीकार किया जाता है।

परिणामतः सामान्यीकरण स्थापित होता है कि केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आयाम स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति की योग्यता में सार्थक अन्तर है। जबकि केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण की योग्यता एवं दूसरों के संवेगों के प्रबन्ध की योग्यता में ,संवेगात्मक बुद्धि के आयाम दूसरों के संवेगो को समझने की योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.12 निष्कर्ष, चर्चा एवं सुझाव : षोध परिकल्पना के परीक्षण हेतु संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित प्रदत्तों के साँख्यिकीय विष्लेषण पष्चात पाया गया है कि केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर नही है। परन्तु आयामवार षोध परिकल्पना केन्द्रीय **एवं** राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति की योग्यता में सार्थक अन्तर है जबकि केन्द्रीय **एवं**

राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की दूसरों के संवेगों को समझने की योग्यता, स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण की योग्यता, दूसरों के संवेगों के प्रबन्ध की योग्यता के सार्थक अन्तर नहीं है। **रानी (2017)** ने अध्ययन में पाया कि सीनियर सेकण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, लिंग और विविध प्रकार के विद्यालयों के संदर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। शोधकर्त्री की दृष्टि से इस बात की संभावना हो सकती है कि केन्द्रीय विद्यालय का वातावरण राजकीय विद्यालय की अपेक्षा ज्यादा अनुशासित हो पाने के कारण हो सकता है कि केन्द्रीय एवं राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की स्वयं के संवेगों की अभिव्यक्ति में सार्थक अन्तर है।

प्रस्तुत शोध के परिणाम जयपुर के केन्द्रीय एवं राजकीय विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियों के लघु न्यादर्ष से प्राप्त प्रदत्तों के साँख्यिकीय विष्लेषण पर आधारित है। किन्तु व्यापकता की दृष्टि से यह उचित होगा कि इस प्रकार के अध्ययन न्यादर्ष का आकार बढ़ा कर अन्य षहरों के केन्द्रीय एवं राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किये जायें जिससे कि प्रस्तुत शोध के प्राप्त परिणामों की पुष्टि की जा सके एवं विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर होता है या नहीं के कारणों का पता लगा कर गुणात्मक ‘षोध किया जा सकता है।

– संदर्भ –

अन्नाकोडाई .आर.(2013), इमोशनल इंटेलीजेंस ऑफ द स्टूडेंटस् एट हायर सेकण्डरी लेवल, ग्लोबल रिसर्च एनालिसिस X 34, वाल्यूम–2, इश्यू 9 सितम्बर 2013
theglobaljournals.com/gra/

बानो फरहीना, मकबूल मारीया एवं अहमद भट्ट शाबिर, (2013), इमोशनल इन्टेलीजेंस अंमग एडोलेसेंट बॉयस एण्ड गर्ल्स इन श्रीनगर, एन. इन्टरनेशनल पीयर रिव्यूड एण्ड रिफर्ड एस्कालरली रिसर्च जनरल फॉर ह्यूमैनिटी सांइस एण्ड इगंलिश लेंग्वेज, अक्टुबर नवम्बर, 2014, वाल्युम 1, इष्यू VI, पृष्ठ संख्या 880 www.srjis.com

कुमारी, अर्चना एवं एस,चामुण्डेष्वरी (2015), इमोशनल इण्टेलीजेन्स, स्कूल इन्वोल्वमेंट एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ स्टूडेण्डस्, ए.ई.आई.जे.एम.आर., वोल्यूम 3, इष्यू 2, आईएसएसएन संख्या 2348–6724 ।

मिश्रा, के. एस. (2007), इमोषनल इण्टेलीजेंसः कांसेप्ट, मेजरमेंट एण्ड रिसर्च, एसोसिएषन फॉर एजुकेषनल स्टडीज, इलाहाबाद

एन. सी. ई. आर. टी. (2007), सेवन्थ आल इण्डिया स्कूल एजूकेशन सर्वे, न्यू देहली।

नारा ,अर्चना (2014), टू स्टडी द इमोशनल इन्टेलीजेन्स ऑफ स्कूल स्टूडेण्ट ऑफ हरियाणा इन रिस्पेक्ट ऑफ सेक्स एण्ड लोकेल, इण्टरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च, वाल्यूम 1, इस्यू 3, पृ.सं. 33

एम. ट्रीनिडैड सैनचेज–नुजेन, पैबेलो फरनानडेज–बोरोकाल एवं अन्य (2008), डज इमोशनल इन्टेलीजेन्स डिपेंड ऑन जेंडर ? द सोषलाइजेषन ऑफ इमोशनल कम्पीटीन्सीज इन मैन एण्ड वुमेन एण्ड इट्रस इम्पलीकेषनस, इलेक्ट्रानकि जनरल ऑफ रिसर्च इन एजुकेषनल साइकोलॉजी, वाल्यूम 6(2),न. 1 पृ.सृ. 455–474 ISSN 1696-2095.

रानी, रेखा (2017) ने इमोशनल इन्टेलीजेन्स एमंग सीनियर सेकण्डरी स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेषन टू देयर जेण्डर, टाइप ऑफ स्कूल एण्ड एकडमिक एचीवमेंट,भारतीयम इन्टरनेषनल जनरल ऑफ एजूकेषन एण्ड रिसर्च, वाल्यूम 6, इस्यू ।।, पृ.सं. 13

सिंह, पूनम (2006), ए स्टडी ऑफ एग्जामिनेषन स्ट्रेस इन रिलेषन टू इमोषनल इंटेलीजेंस, जनरल ऑफ एजूकेषनल स्टडीज, एसोसिएषन फॉर एजूकेषनल स्टडीज, इलाहाबाद, वाल्यूम 4 न. 1 – 2 पृ.सं. 34

टेलर (2008) यथोधृत प्रतीक उपाध्याय (2008), इमोशनल इण्टेलीजेन्स इन टीचर एजूकेशन अनुभव पब्लिकेशन हाउस, इलाहाबाद पृ.सृ. 45